सामवेदका परिचय एवं वैशिष्ट्य

पूर्वीय साहित्य, ज्ञान-विज्ञान और मानव-सभ्यताओंका अजस्त्र स्रोत वेद है। ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेदकी हजारसे भी अधिक शाखाएँ महाभाष्यमें गिनायी गयी हैं। जिनमेंसे १० से अधिक शाखाएँ तो अभी भी मिलती हैं। माना गया है कि पहले समग्र वेद एक ही भागमें आबद्ध था। सभी लोग समस्त वेद ग्रहण करनेकी सामर्थ्य रखते थे। जब कालक्रमसे मनुष्यकी मेधाशक्ति क्षीण होती गयी, तब कृष्णद्वैपायन (व्यास)-ने लोकोपकारार्थ इसे अक्षुण्ण बनाये रखनेके लिये अलग-अलग नामके साथ वेदका विभाजन करके पैल, वैशम्पायन, जैमिनि और सुमन्तु नामके अपने चार शिष्योंको उपदेश किया। जैमिनिसे सामवेदकी परम्परा आरम्भ होती है। जैमिनिने अपने पुत्र सुमन्तु, सुमन्तुने अपने पुत्र सुन्वान् और सुन्वान्ने अपने पुत्र सुकर्माको पढ़ाया। इस प्रकार सामवेदकी अध्ययनपरम्परा चलती आ रही है। गद्य, पद्य और गीतिके स्वरूपगत भेदसे प्रसिद्ध वेदत्रयीमें गीतिभाग सामवेद कहलाता है।

महाभाष्यमें सामवेदकी हजार शाखाएँ होनेका उल्लेख मिलता है—'**सहस्त्रवर्त्मा सामवेदः**।' सामतर्पणके अवसरपर साम गानेवाले जिन तेरह आचार्योंको तर्पण दिया जाता है, वे निम्न हैं—

(१) राणायन, (२) सात्यमुग्रि-व्यास, (३) भागुरि-औलुण्डि, (४) गौल्मुलवि, (५) भानुमान, (६) औपमन्यव, (७) दाराल, (८) गार्ग्य, (९) सावर्णि, (१०) वार्षगणि, (११) कुथुमि, (१२) शालिहोत्र और (१३) जैमिनि।

—इनमेंसे आज राणायन, कुथुमि और जैमिनि आचार्योंके नामसे प्रसिद्ध राणायनीय, कौथुमीय और जैमिनीय—तीन शाखाएँ प्राप्त होती हैं। जिनमेंसे राणायनीय शाखा दक्षिण देशमें प्रचलित है। कौथुमीय विन्ध्याचलसे उत्तर भारतमें पायी जाती है। केरलमें जैमिनीय शाखाका अध्ययन-अध्यापन कराया जाता है। पूरे भारतमें ज्यादा-से-ज्यादा कौथुमीय शाखा ही प्रचलित है और इसके उच्चारणगत भेदसे नागरपद्धति और मद्रपद्धति करके दो पद्धतियाँ दिखायी पड़ती हैं। राणायनीयकी गोवर्धनीपद्धति काशीमें देखी जा सकती है। सामवेदकी हजार शाखाएँ न मानकर उच्चारणकी हजार पद्धतियाँ सत्यव्रत सामश्रमीने मानी हैं। कौथुमीय और राणायनीय शाखाओंके गान-ग्रन्थोंमें कुछ भिन्नता देखी जा सकती है। यद्यपि राणायनीय शाखाका गान आजतक कहींसे भी न छपनेके कारण दोनों शाखाओंका काम कौथुम शाखासे चलानेकी परम्परा चल पड़ी है, तथापि पृथक् लिखित गान होनेका दावा राणायनीय शाखावालोंका है।

सामवेदमें अनेक अवान्तर स्वरोंके अतिरिक्त प्रमुख सात स्वरोंके माध्यमसे गीतिका पूर्ण स्वरूप पाया जाता है। '**गीतिषु सामाख्या**'—इस जैमिनीय सूत्रमें जैमिनि गीतिप्रधान मन्त्रको ही साम कहते हैं। '**ऋच्यध्यूढं साम**'''**गीयते**' (छा० उ० १। ६। १)-में स्वयं श्रुति ऋक् और सामका अलग सम्बन्ध दिखाती है। बृहदारण्यकोपनिषद्में '**सा चामश्चेति तत्साम्नः सामत्वम्**' (१। ३। २२) वाक्यसे '**सा**' का अर्थ ऋक् और '**अम**' का अर्थ गान बताकर सामका व्युत्पादन किया गया है। इससे बोध होता है कि इन दोनोंको ही '**साम**' शब्दसे जानना चाहिये। इसलिये ऋचाओं और गानोंको मिलाकर सामवेदका मन्त्रभाग पूर्ण हो जाता है। मन्त्रभागको संहिता भी कहते हैं। इसी कारण सामवेदसंहिता लिखी हुई पायी जाती है।

मन्त्रभागमें आर्चिक और गान रहते हैं। आर्चिक भी पूर्वार्चिक और उत्तरार्चिकमें बँटा है। दोनोंमें कुल मिलाकर २७ अध्यायोंमें १८७५ मन्त्र पठित हैं। जिनमेंसे ७५ मन्त्रोंको छोड़कर अवशिष्ट सभी ऋग्वेदके शाकल शाखामें पाये

जाते हैं। ७५ मन्त्रोंके भी शांखायन आदि लुप्त शाखाओंमें पाये जानेका मत विद्वानोंका रहा है। किसीके मतमें ये सामवेदके ही मन्त्र माने गये हैं। कुछ लोग सामवेदके मन्त्रोंको ऋग्वेदमें पाये जानेके कारण सामवेदीय ऋचाओंका स्वतन्त्र अस्तित्व न होनेका दावा करते हैं, परंतु व्यासने चारों वेदोंका उपदेश किया था। सबसे पहले किये हुए उच्चारणको ही उपदेश कहते हैं। यदि ऋग्वेदीय मन्त्र सामवेदमें ले आये गये हैं तो फिर सामवेदके पृथक् उपदेशकी क्या आवश्यकता थी। ऋग्वेद और सामवेदके मन्त्रोंमें पाठगत और स्वरगत बहुत भेद पाये जाते हैं। इसके आधारपर इन मन्त्रोंका स्वतन्त्र अस्तित्व माननेवाले भी हैं। इन सामवेदीय ऋचाओंमें विविध स्वरों एवं आलापोंसे प्रकृतिगान और ऊह तथा ऊह्यगान गाये गये हैं। प्रकृतिगानमें ग्रामगेयगान और आरण्यकगान हैं। प्रथम गानमें आग्नेय, ऐन्द्र और पावमान—इन तीन पर्वोंमें प्रमुखरूपसे क्रमशः अग्नि, इन्द्र और सोमके स्तुतिपरक मन्त्र पढ़े गये हैं। आरण्यकमें अर्क, द्वन्द्व, व्रत, शुक्रिय और महानाम्नी नामक पाँच पर्वोंका संगम रहा है। सूर्यनमस्कारके रूपमें प्रत्येक रविवारको शुक्रियपर्व-पाठ करनेका सम्प्रदाय सामवेदीयोंका है। जंगलोंमें गाये जानेवाले सामोंका पाठ होनेसे इस गानभागको आरण्यक कहा गया है। ग्रामगेयगान और आरण्यक-गानके आधारपर क्रमशः ऊहगान और ऊह्यगान प्रभावित हैं। विशेष करके सोमयागोंमें गाये जानेवाले स्तोत्र ऊह और ऊह्यगानमें मिलते हैं। इन दोनोंमें दशरात्र, संवत्सर, एकाह, अहीन, सत्र, प्रायश्चित्त और क्षुद्रसंज्ञक सात पर्वोंमें ताण्ड्य ब्राह्मणद्वारा निर्धारित क्रमके आधारपर स्तोत्रोंका पाठ है। जैसे कि ताण्ड्य ब्राह्मण अपने चतुर्थ अध्यायसे ही यागका निरूपण करता है और सर्वप्रथम गवामयन नामक सत्रात्मक विकृतियाग बतलाता है। प्रकृतिभूत द्वादशाह यागके प्रमुख दस दिनोंके अनुष्ठानसे इस गवामयन यागका समापन किया जाता है। इसलिये गवामयन यागके स्तोत्र ऊह तथा ऊह्यगानके प्रथम पर्व दशरात्रपर पढ़े गये हैं। अन्य सभी पर्व इसी प्रकार देखे जा सकते हैं।

पूरे गानभागमें तीन प्रकारके साम देखे जाते हैं। केवल ऋचाका पदोंमें ही गाया हुआ साम आविःसंज्ञक कहा जाता है। ऋक्-पदों और स्तोभोंमें गाया हुआ साम लेशसंज्ञक और पूरे स्तोभोंमें गान किया हुआ साम छन्नसंज्ञक है। ऋक्के पदों वा अक्षरोंसे भिन्न हाउ, औहोवा और इडा-जैसे पदोंको स्तोभ कहा गया है। सामवेदीय रुद्रमें '**अधिपताइ**' प्रतीकवाले तीन साम पूरे स्तोभोंमें गाये गये हैं। सेतु साममें '**दानेनादानम्**', '**अक्रोधेन क्रोधम्**', '**श्रद्धयाश्रद्धाम्**', '**सत्येनानृतम्**'—ये चार पद भी स्तोभ हैं। इन स्तोभोंको देखनेसे स्तोभोंके सार्थक और निरर्थक होनेका बोध होता है।

ब्राह्मणभाग—

कर्मोंमें मन्त्रभागका विनियोजन ब्राह्मण करते हैं। सामान्यतया सामवेदके आठ ब्राह्मण देवताध्याय ब्राह्मणके सायण-भाष्यके मङ्गलाचरण-श्लोकमें गिने गये हैं। जिनके नाम इस प्रकार हैं—

(१) प्रौढ (ताण्ड्य)-ब्राह्मण, (२) षड्विंशब्राह्मण, (३) सामविधानब्राह्मण, (४) आर्षेयब्राह्मण, (५) देवताध्याय-ब्राह्मण, (६) छान्दोग्योपनिषद्-ब्राह्मण, (७) संहितोपनिषद्-ब्राह्मण और (८) वंशब्राह्मण।

ताण्ड्य-ब्राह्मणका अध्यायसंख्याके आधारपर पञ्चविंश नाम पड़ा है तो सबसे बड़ा होनेसे महाब्राह्मण भी कहा जाता है। इन ब्राह्मणोंके अतिरिक्त जैमिनीय शाखाके जैमिनीय ब्राह्मण, जैमिनीयोपनिषद् और जैमिनीयार्षेयब्राह्मण भी देखनेमें आते हैं। इनसे भी अधिक ब्राह्मण होनेका संकेत मिलता है, परंतु पुस्तकें उपलब्ध नहीं हैं। ये ब्राह्मण विशेषतया औदगात्र कर्मोंका प्रतिपादन करते हैं। प्रमुखरूपमें यागोंमें स्तोत्रोंका गान औदगात्र कर्म है। सोमलता द्रव्य-प्रधान यागोंमें आहूत देवोंकी स्तोत्रोंद्वारा स्तुति करना उद्गाता, प्रस्तोता और प्रतिहर्ता नामक सामगायकोंका कार्य है। अपने प्रतिपाद्यका विधान करनेके लिये विविध आख्यायिकाओं और उपपत्तियोंको देना ब्राह्मणकी अपनी शैली है। जैसे 'वीङ्क' नामक सामगानसे च्यवन ऋषिके वृद्धावस्थासे युवा होनेकी आख्यायिका आयी है, जिससे वीङ्क सामका महत्त्व ताण्ड्य-ब्राह्मण (१४। ६। १०)-में बताया गया है। यह वीङ्क साम '**यदिन्द्र चि यन्मन्यसे**' ऋचामें ऊहके दशरात्र पर्वपर गाया गया है। इसी प्रकार वात्स सामके विषयमें एक आख्यायिका प्रसिद्ध है। वत्स और मेधातिथि नामके दो काण्व ऋषि थे। मेधातिथिने वत्सको शूद्रपुत्र तथा अब्राह्मण कहकर अपमानित किया। फिर ब्राह्मणत्वनिर्णयके लिये वत्स 'वात्स साम' को और मेधातिथि 'मेधातिथ्य साम'को पढ़कर अग्निके पास चले गये। उसी समय वत्सने 'वात्स साम' को दोहराते हुए अग्निमें प्रवेश किया, परंतु अग्निने उसको छुआ भी नहीं। इस प्रकार वत्सका ब्राह्मणत्व सिद्ध होनेसे 'वात्स साम' 'कामसनि' (इच्छा पूरा करनेवाला)-के

नामसे प्रसिद्ध हुआ। यह आख्यायिका ताण्ड्य-ब्राह्मण (१४।६।६)-में आयी है। प्रकृत 'वात्स साम', 'आतेवत्सा' ऋचापर ऊहके दशरात्र पर्व (७।१७)-में पठित है।

छः अध्यायोंमें विभक्त षड्विंशब्राह्मणके छठे अध्यायमें विशेष बात बतायी जानेसे इस ब्राह्मणको ताण्ड्यका निरन्तर रूप मानकर २६ वाँ अध्याय माना गया। जिससे ब्राह्मणका नाम भी षड्विंश रखा गया। संसारमें स्वाभाविक रूपसे घटनेवाली घटनाओंसे भिन्न अनेक अद्भुत घटनाएँ भी होती हैं। उससे निपटनेके लिये स्मार्त-यागों और सामोंका विधान इस अध्यायमें किया गया है। जैसे मकानपर वज्रपात होना, प्रशासनिक अधिकारीसे विवाद बढ़ना तथा आकस्मिक रूपमें हाथियों और घोड़ोंकी मृत्यु होना लोगोंके लिये अनिष्ट-सूचक है। इससे शान्ति पानेके लिये इन्द्रदेवतासम्बद्ध पाककर्म और **'इन्द्रायेन्दो मरुत्वते'** (४७२) ऋचामें **'इषो वृधीयम्'** सामका विधान किया गया है। वैसे ही भूकम्प होना, वृक्षोंसे खून बहना, गायमें मानव या भैंस आदिके बच्चे पैदा होना, विकलाङ्ग शिशुका जन्म होना—जैसे अनेक सांसारिक अद्भुत कर्मोंसे शान्ति पानेके लिये पाक-कर्मों और सामोंका विधान है। इस अध्यायमें पाये गये **'दण्डपाणये, चक्रपाणये, शूलपाणये'** आदि ब्राह्मणवाक्योंमें देवताओंका शस्त्र धारण किया हुआ शरीरधारी स्वरूप होनेका संकेत मिलता है और आज बने हुए शरीरधारी देवोंकी प्रतिमाएँ ब्राह्मणवाक्योंपर आधारित मानी जा सकती हैं।

तीन अध्यायवाले सामविधानब्राह्मणके पहले अध्यायमें वर्णित कथाके अनुसार सृष्टिक्रममें ब्रह्माने संततियोंके आहारके रूपमें सामोंकी परिकल्पना की थी, जो सामके सात स्वरोंसे तृप्त होती गयी थी। जैसे क्रुष्ट, प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ, मन्द्र और अतिस्वार—इन सात स्वरोंसे क्रमशः देवों, मानवों, पशुओं, गन्धर्वों, अप्सराओं, पितृगण एवं पक्षियों, असुरों तथा पूरे स्थावर-जंगमात्मक वस्तुओंके तृप्त होनेका उल्लेख है, जो आज भी प्रासंगिक है। इसी तरह मानव-जीवनके विविध पक्षोंसे जुड़ी हुई दृष्ट और अदृष्ट आकाङ्क्षाओंकी पूर्तिके लिये कर्मों और सामोंका विधान करना इस ब्राह्मणका प्रतिपाद्य है। जैसे—

अभीष्ट	*सामनाम*	*गानसंकेत*
१. श्रीसाधन	अङ्गिरसां हरिश्रीनिधनम्	ग्रामगेयगान ५, ९, १
२. यशोलाभ	इन्द्रस्य यशः	ग्राम० ६, २, १—२४८
३. सुन्दर दीर्घायुवाला पुत्र	अपत्यम्	आरण्यक गान ३, ४, १
४. अभीप्सित स्त्रीकी प्राप्ति	अश्विनोः साम	ग्राम० ५, ६, २—१७२
५. रोगशान्ति	काशीतम्	ग्राम० १, ३, १—३३
६. मोक्ष	पर्क	ग्राम० १, १, १,१
७. कन्याके लिये वरलाभ	शौनः शेपे	ग्राम० १, १, १-२, ७

छः अध्यायोंमें विभाजित आर्षेयब्राह्मण सामोंके नामसे सम्बद्ध ऋषियोंका प्रतिपादन करता है। मन्त्रद्रष्टा ऋषिके नामसे सामोंका नाम बतलानेवाले ब्राह्मणका नाम आर्षेय पड़ा है। चार खण्डोंमें विभक्त देवताध्यायब्राह्मण निधनके आधारपर सामोंके देवताओंको बतलाता है। निधन पाँच भक्तिवाला सामका एक भक्ति-विभाग है।

दस प्रपाठकसे पूर्ण होनेवाले छान्दोग्योपनिषद्-ब्राह्मणके प्रथम दो प्रपाठकोंमें विवाहादि-कर्मसे सम्बद्ध मन्त्रोंका विधान है। अवशिष्ट आठ प्रपाठक उपनिषद् हैं। इस उपनिषद्-खण्डमें सामके सारतत्त्वको स्वर कहा गया है। जैसे शालावत्य और दाल्भ्यके संवादमें सामकी गतिको **'स्वर होवाच'** कहकर स्वरोंको ही सामका सर्वस्व माना गया है। देखा जाता है कि बृहद् रथन्तर आदि साम आर्षेयसे सम्बद्ध न होकर स्वरोंसे ही प्रसिद्ध हैं अर्थात् ये साम क्रुष्ट-प्रथमादि स्वरोंकी ही अभिव्यक्ति करते हैं। इसी उपनिषद् (२।२२।२)-में उद्गाताद्वारा गाये गये एक स्तोत्रका देवोंमें अमृत दिलाने, पशुओंमें आहार तय करने, यजमानको स्वर्ग दिलाने, स्वयं स्तोताको अन्नोत्पादन करानेका उद्देश्य रखते हुए गान करनेका विधान बतलाया गया है। इससे सामगानका महत्त्व देखा जा सकता है।

संहितोपनिषद्-ब्राह्मणके पाँच खण्डोंसे सामसंहिताका रहस्य बतलाया गया है। इसके द्वितीय खण्डमें भकारयोजनके साथ रथन्तर सामका स्वरूप बताकर भकारके प्रयोगसे चमकते हुए ऐश्वर्यके मिलनेकी बात बतायी गयी है। सबसे अन्तिम वंशब्राह्मण तीन खण्डोंमें शर्वदत्तगार्ग्यसे ब्रह्मपर्यन्त सामवेदकी अध्ययनपरम्पराको बतलाता है। इस प्रकार मन्त्र और ब्राह्मणको मिलाकर ही वेद पूर्ण हो जाता है।

वेदाङ्ग—

वेदाङ्गोंमेंसे कल्पशास्त्र चार प्रकारोंमें बँटा है—श्रौतसूत्र, गृह्यसूत्र, धर्मसूत्र और शुल्बसूत्र। श्रौतसूत्र दो हैं—द्राह्यायण और लाट्यायन। वैसे ही खादिर और गोभिल दो गृह्यसूत्र मिलते हैं। इस तरह देश-प्रयोगके भेदसे श्रौतसूत्र और गृह्यसूत्रके दो-दो भेद किये गये हैं अर्थात् जहाँ दक्षिणके सामवेदी अपने श्रौत और स्मार्त-कर्म क्रमशः द्राह्यायण श्रौतसूत्र और खादिर गृह्यसूत्रसे सम्पन्न करते हैं तो वही कर्म उत्तरके सामवेदी लाट्यायन श्रौतसूत्र और गोभिल गृह्यसूत्रसे सम्पन्न करते हैं। धर्मसूत्रमें गौतम-धर्मसूत्र २८ अध्यायोंमें विभक्त होकर वर्णधर्म, राजधर्म, नित्यकर्म आदिका प्रतिपादन करता है। सामवेदमें शुल्बसूत्रका अभाव देखा जाता है।

सामवेदकी उच्चारण-प्रक्रियाको बतलानेवाली प्रमुख तीन शिक्षाएँ हैं—नारदीयशिक्षा, गौतमशिक्षा और लोमशशिक्षा। तीनों शिक्षाग्रन्थ दो प्रपाठकों और सोलह कण्डिकाओंमें विभाजित हैं। उपाङ्ग ग्रन्थके रूपमें प्रसिद्ध प्रातिशाख्य साहित्यमें सामवेदीय प्रातिशाख्योंका विशिष्ट स्थान रहा है। सामसंहिताके यथार्थ उच्चारणके लिये ऋक्तन्त्र, सामतन्त्र, अक्षरतन्त्र और पुष्पसूत्र रचे गये हैं। ऋचाओंका अध्ययन करनेवाला ऋक्तन्त्र पाँच प्रपाठकों और तीस खण्डोंमें विभक्त है। वैसे ही प्रकृतिगानके स्वरोंका अध्ययन करनेवाला सामतन्त्र १३ प्रपाठकोंमें लिखा हुआ है। स्तोभोंका निरूपक अक्षरतन्त्र दो प्रपाठकोंमें बँटा है। इसको सामतन्त्रका अङ्ग माना गया है। ऊह, ऊह्य साम-विवेचक पुष्पसूत्र, दस प्रपाठकों और सौ खण्डोंमें विभाजित है।

इस वेदका आरण्यक 'तवलकार' है। जिसको जैमिनीयोपनिषद् ब्राह्मण भी कहा जाता है। चार अध्यायों और अनेक अनुवाकोंसे इसकी ग्रन्थाकृति बनी है। इसी प्रकार केन और छान्दोग्योपनिषद् इस वेदके उपनिषद् हैं। अपनी शाखाके आधारपर केनको तवलकार भी कहा जाता है। आठ प्रपाठकके आदिम पाँच प्रपाठकोंमें उद्‌गीथ (ॐकार) और सामोंका सूक्ष्म विवेचन करनेवाला छान्दोग्योपनिषद् अन्तके तीन प्रपाठकोंमें अध्यात्मविद्या बतलाता है। सामवेदीय महावाक्य **'तत्त्वमसि'**का निरूपण इस भागमें किया गया है।

सामवेदसे ही संगीतशास्त्रका प्रादुर्भाव माना जाता है। **'सामवेदादिदं गीतं संजग्राह पितामहः'** (१। २५) अर्थात् 'ब्रह्माने सामवेदसे गीतोंका संग्रह किया' ऐसा कहकर संगीतरत्नाकरके रचयिता शार्ङ्गदेवने स्पष्ट शब्दोंमें संगीतका उपजीव्य ग्रन्थ सामवेदको माना है। भरतमुनिने भी इसी बातको सिद्ध करते हुए कहा कि **'सामभ्यो गीतमेव च'** अर्थात् 'सामवेदसे ही गीतकी उत्पत्ति हुई है।' इसी प्रकार विपुल सामवेदीय वाङ्मयको श्रीकृष्णने **'वेदानां सामवेदोऽस्मि'** (गीता १०। २२) अर्थात् 'वेदोंमें मैं सामवेद हूँ' कहकर इसका महत्त्व बढ़ा दिया है। वेणुके अनुरागी, गुणग्राही और ब्राह्मणप्रिय होनेके कारण भगवान् कृष्ण स्वयं अपनी विभूति सामवेदको माने हैं। देखनेमें आता है कि सामवेदमें पद्यप्रधान ऋग्वेदीय मन्त्रों, गद्यप्रधान यजुर्मन्त्रों और गीत्यात्मक मन्त्रोंका संगम है। इसलिये समस्त त्रयीरूप वेदोंका एक ही सामवेदसे ग्रहण हो जानेके कारण—इसकी अतिशय महत्ता और व्यापकताके कारण भगवान् श्रीकृष्णने अपनेको साक्षात् सामवेद बताया है।

[श्रीराम अधिकारीजी, वेदाचार्य]